नव सृजन

आलेख का क्रम

1. प्रकृति के अप्रतिम चितेरे : पंत — 1
   - डॉ. नवीन नंदवाना
2. तट को खोजती हरिशंकर परसाई की शीला — 9
   - डॉ. नीतू परिहार
3. राजस्थान का संत साहित्य — 16
   - डॉ. आशीष सिसोदिया
4. छायावादी काव्य में बिंब सौंदर्य — 26
   - डॉ. नीता त्रिवेदी
5. भारतीय संस्कृति की अजेय परंपरा : राम-कृष्ण साहित्य — 33
   - तरुण पालीवाल
6. दादूपंथ के आदर्श गृहस्थी संत प्रयागदास बियाणी : साहित्य और कृतित्व — 39
   - वीरमाराम पटेल
7. अम्लघात - समाज के चेहरे पर एक अमिट कालिख — 45
   - राकेश कुमार शर्मा
8. फाइटर की डायरी — 49
   - रेखा खराड़ी
9. भारतीय संस्कृति में कृषि और किसान का महत्व — 57
   - प्रेम शंकर मीणा
10. मधु कांकरिया की कहानियों में नारी जीवन — 61
    - वर्षा सिखवाल
11. समकालीन हिंदी कविता का शिल्पगत वैशिष्ट्य — 66
    - गौरव शर्मा
12. साहित्य में करूण दृष्टि - किन्नर विमर्श — 74
    - रेणू वर्मा
13. लोकदेवता जुंझार परंपरा और वर्तमान समाज — 78
    - मंजीत सिंह
14. राजस्थान के हिंदी उपन्यास : राजनीतिक चेतना — 85
    - दोलत राम शर्मा
15. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य उपन्यासों में आर्थिक व्यंग्य का स्वरूप — 92
    - बजरंग लाल मीणा
16. सुकेश साहनी के लघुकथा संग्रह 'डरे हुए लोग' का सामाजिक मनोविश्लेषण — 100
    - पूजा व्यास
17. पद्मजा शर्मा के रेखाचित्रों में सामाजिक जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति — 106
    - कविता कुमारी

292

प्रकृति के अप्रतिम चितेरे : पंत

डॉ. नवीन नंदवाना
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) 313001

आधुनिक हिंदी काव्यधारा में छायावादी युग का अपना विशेष स्थान है। छायावाद की तुलना कई आलोचकों ने भक्तिकालीन कविता से की है, जो इसकी श्रेष्ठता को दर्शाता है। छायावादी काव्यधारा की वृहत्त्रयी में से एक प्रमुख कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। यदि आधुनिक साहित्य में प्रकृति-वर्णन की बात की जाए तो हम पाते हैं कि हिंदी जगत इन्हें प्रकृति के सुकुमार कवि और कोमल कल्पना के कवि के रूप में जानता है।

प्रकृति के सुकुमार कवि पंत का जन्म प्रकृति के सुरम्य वातावरण में बसे अल्मोड़ा के कौसानी ग्राम में (20 मई, 1900 ई.) हुआ। यह स्थान तत्कालीन उत्तर प्रदेश तथा वर्तमान उत्तरांचल में स्थित है। इस स्थान के प्राकृतिक सौंदर्य एवं मनोरमता को हम इस बात से जान सकते हैं कि यह स्थान 'भारत का स्वीट्जरलैंड' के रूप में विख्यात है। अल्मोड़ा से लगभग 53 किमी. दूर बसा कौसानी अपने लंबे देवदार व बाँस के वनों तथा फूलों के सौंदर्य वाले स्थानों के लिए विख्यात है। पंत के विषय में यह भी विख्यात है कि वे अपनी जन्मभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य को एक जगह बैठकर घंटों निहारा करते थे।

हिंदी की आधुनिक कविता में जब प्रकृति चित्रण की बात की जाती है, तब सभी के मानस पटल पर एक ही नाम तुरंत उभर कर आता है और वह है- सुमित्रानंदन पंत। प्रकृति के सुकुमार कवि के नाम से विख्यात पंत का बचपन प्रकृति की सुरम्य गोद में बीता। कूर्मांचल का वह प्राकृतिक वैभव वाला प्रदेश पंत को बहुत कुछ सीखा गया। स्वयं कवि ने अपनी काव्य प्रेरणा के पीछे इस प्रकृति के अतुलनीय योगदान को स्वीकारा भी है। आधुनिक कवि की भूमिका में पंत ने लिखा है कि- ''कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली। जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है। कवि जीवन से पहले भी, मुझे याद है, मैं घंटों एकांत में बैठा, प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था ; और कोई अज्ञात आकर्षण, मेरे भीतर, एक अव्यक्त सौंदर्य का जाल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था। जब कभी मैं आँख मूँद कर लेटता था तो वह दृश्यपट चुपचाप मेरी आँखों के सामने घूमा करता था। .....और शायद यह पर्वत प्रांत के वातावरण का ही प्रभाव है कि मेरे भीतर विश्व और जीवन के प्रति एक गंभीर आश्चर्य की भावना, पर्वत ही की तरह निश्चल रूप से अवस्थित है।''[1]

'वीणा' से 'पल्लव' तक की रचनाओं में हमें प्रकृति के विविध रूपों का वर्णन द्रष्टव्य होता है। पंत के प्रकृति-वर्णन को हम निम्नलिखित बिंदुओं से समझ सकते हैं- आलंबन

रूप, उद्दीपन रूप, रहस्य रूप, संवेदनात्मक रूप, मानवीकरण रूप, प्रतीकात्मक रूप, संवेदनात्मक रूप, लोक शिक्षा रूप और अलंकार रूप।

पंत के यहाँ आलंबन रूप में प्रकृति सौंदर्य का वर्णन द्रष्टव्य होता है। आलंबन रूप के विषय में भारतीय काव्यशास्त्र में दो प्रकार की वर्णन परिपाटी का उल्लेख मिलता है। एक तो 'नाम परिगणन प्रणाली' जिसमें रचनाकार विविध प्राकृतिक उपादानों के नाम का स्मरण मात्र करवाते हुए अपनी रचना में प्राकृतिक सौंदर्य की उपस्थिति दर्ज कराता है। वहीं दूसरी प्रणाली 'संश्लिष्ट-चित्रण' की है। जहाँ कवि केवल नाम गणना को अपना उद्देश्य नहीं मानता बल्कि प्रकृति के विराट वैभव का संश्लिष्ट बिंब प्रस्तुत करता है। पंत के यहाँ हमें यूँ तो प्रकृति वर्णन के दोनों ही रूप मिलते हैं किंतु यहाँ हम यह कह सकते हैं कि पंत ने दूसरे रूप का अधिक प्रयोग किया है।

'ग्राम्या' नामक संग्रह की 'ग्राम श्री' कविता में हमें प्रकृति के आलंबन रूप में नाम परिगणन स्वरूप की झाँकी दिखाई पड़ती है। यहाँ कवि ने विभिन्न फूलों व सब्जियों का नाम परिगणन किया है-

''महके कटहल, मुकुलित जामुन, जंगल में झरबेरी झूली।
फूले आड़ू, नीबू, दाड़िम, आलू गोभी बैंगन मूली !
पीले मीठे अमरूदों में, अब लाल लाल चित्तियाँ पड़ीं।
पक गए सुनहले मधुर बेर, अँवली से तरु की डाल जड़ीं।
लहलह पालक, महमह धनिया, लौकी औ 'सेमफली, फैली।
मखमली टमाटर हुए लाल, मिरचों की बड़ी हरी थैली।
गंजी को मार गया पाला, अरहर के फूलों को झुलसा।''[2]

पंत के यहाँ संश्लिष्ट बिंबों के प्रयोग प्रमुखता से हुए हैं। 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में हम ऐसा ही संश्लिष्ट बिंब देख सकते हैं-

''पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश, पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश !
मेखलाकार पर्वत अपार, अपने सहस्र दृग सुमन फाड़
अवलोक रहा है बार-बार, नीचे जल में निज महाकार
जिसके चरणों में पला ताल दर्पण सा फैला है विशाल!!''[3]

एक अन्य स्थान पर प्रकृति के आलंबन स्वरूप का वर्णन पंत इस प्रकार करते हैं-

''खींच ऐंचीला भ्रू सुरचाप, शैल की सुधि यों बारंबार-
हिला हरियाली की सुदुकूल, झुला झरनों का झलमल हार
जलद पर से दिखता मुख चंद्र, पलक पल-पल चपला के भार।''[4]

293

'नौका विहार' के निम्नलिखित अंश में भी हम प्रकृति के आलंबन रूप वर्णन को देख सकते हैं-

''नौका से उठती जल हिलोर, हिल पड़ते नभ के ओर-छोर !
विस्फारित नयनों से निश्छल, कुछ खोज रहे हैं तारकदल।
ज्योतित कर जल का अंतस्तल।'[6]

जब प्रकृति का वर्णन इस प्रकार किया जाता है कि वह वर्णन मानवीय भावों को उद्दीप्त करने लगे, तब वहाँ उद्दीपन रूप प्रकृति चित्रण कहलाता है। प्रकृति का उद्दीपन भरा चित्रण संयोग एवं वियोग दोनों ही अवस्थाओं में द्रष्टव्य होता है। 'गुंजन', 'मिलन', 'प्रथम मिलन' आदि कविताओं में संयोगजन्य प्रकृति वर्णन दिखाई पड़ता है तो वहीं 'आँसू', 'परिवर्तन', उच्छ्वास आदि की कई कविताओं में वियोग दशा का उद्दीपन स्वरूप द्रष्टव्य होता है।

''आज मुकुलित कुसुमित चहुँ ओर, तुम्हारी छवि छटा अपार।
फिर रहे उन्मद मधु प्रिय भौंर, नयन पलकों के पंख पसार।।'[6]

एक अन्य उदाहरण में भी हम संयोगजन्य उद्दीपक चित्रण देख सकते हैं। 'आज रहने दो गृहकाज' कविता में पंत लिखते हैं कि-

''आज जाने कैसी वातास, छोड़ती सौरभ-श्लथ उच्छ्वास
प्रिये लालसा सालस वातास, जगा रोओं में सौ अभिलाष।

XXX

शिथिल स्वप्न पंखुड़ियाँ खोल, आज अपलक कलिकाएँ बाल।
गूँजता भूला भौंरा डोल, सुमुखि। उर के सुख से वाचाल।
आज चंचल, चंचल मन प्राण, आज रे शिथिल, शिथिल तनभार।
आज दो प्राणों का दिन मान, आज संसार नहीं संसार।।'[7]

'आँसू' कविता की निम्नलिखित पंक्तियों में हम प्रकृति का वियोग समय का उद्दीपन वर्णन देख सकते हैं-

''तेरे उज्ज्वल आँसू सुमनों में सदा
वास करेंगे, भग्न हृदय, उनकी व्यथा
अनिल पोंछेगी ; करुण उनकी कथा
मधुप बालिकाएँ गाएँगी सर्वथा।'[8]

कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ भी हमारे भावों को उद्दीपन करती है-

''शैवालिनी जाओ मिलो तुम सिंधु से
अनिल, आलिंगन करो तुम गगन को
चंद्रिके, चूमो तरंगों के अधर
उडुगणों, गाओ, पवन वीणा बजा।'[9]

रहस्यवाद छायावादी कविता की विशेषता है। यहाँ कवि अनन्त, अज्ञात सत्ता को आलंबन बनाकर उसके प्रति विविध प्रकारों से अपना प्रेम निवेदन करता है। जब कवि प्रकृति के विविध उपादानों में उस परम सत्ता का आभास कर प्रकृति वर्णन करता है, तब वहाँ का प्रकृति वर्णन रहस्यात्मक हो जाता है। 'मौन-निमंत्रण' कविता इस बात का एक अच्छा उदाहरण है-

''स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार
चकित रहता शिशु सा नादान
विश्व के पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं जब स्वप्न अजान
न जाने नक्षत्रों से कौन।
निमंत्रण देता मुझको मौन।'[10]

इस कविता के अतिरिक्त 'सोने का एक गान', 'मुस्कान', 'मिले तुम राकापति में आज', 'शांत सरोवर का उर' (गुंजन) आदि में रहस्यरूप प्रकृति के दर्शन होते हैं।

''शांत सरोवर का उर, किस इच्छा से लहरा कर
हो उठता चंचल चंचल !
सोये हुए वीणा के स्वर, क्यों मधु स्पर्श से मर् मर्
बज उठते प्रतिपल, प्रतिपल !
आशा के लघु अंकुर, किस सुख से पर फड़का कर
फैलाते नव दल पर दल।'[11]

मनुष्य की संवेदना को मोटे तौर पर हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। एक प्रथम अवस्था वह है जिसमें हर्ष-सुख आदि के भाव संचरित होते हैं और दूसरी वह जिसमें वेदना, पीड़ा और करुणा-शोक आदि भाव व्यक्त होते हैं। प्रकृति का भी वर्णन कवि संवेदना के दोनों स्तरों पर करता है। पंत के यहाँ भी हमें संवेदना के दोनों ही रूप मिलते हैं-

''एक पल, मेरे प्रिया के दृग पलक
थे उठे ऊपर, सहज नीचे गिरे,
चपलता ने इस विकंपित पुलक से
दृढ़ किया मानो प्रणय संबंध था।
लाज की मादक सुरा जी लालिमा

294

फैल गालों में नवीन गुलाब से
छलकती थी बाढ़ सी सौंदर्य की
अधखुले स्मित गढ़ों से सीप से।'[12]

XXX

कभी उर में अगणित मृदुभाव, कूँजते है विहगों से हाय।
अरुण कलियों से कोमल घाव, कभी खुल पड़ते हैं असहाय
इद्र धनु-सा आशा का सेतु, अनिल में अटका अछोर।
कभी कुहरे-सी धूमिल घोर, दीखती भावी चारों ओर।'[13]

छायावादी काव्य की प्रवृत्तियों में मानवीकरण भी एक प्रधान प्रवृत्ति रही है। जब कवि किसी निर्जीव पदार्थ या प्रकृति में मानवीय गुणों का आरोप करता है, तब वहाँ मानवीकरण होता है। पंत की कविता में हम प्रकृति के मानवीकरण के सुंदर दृश्य देख सकते हैं-

''पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश, पल पल परिवर्तित प्रकृति वेश
मेखलाकार पर्वत अपार, अपने सहस्र दृग सुमन फाड़
अवलोक रहा है बार-बार, नीचे जल में निज महाकार
गिरि के उर से उठ-उठ कर, उच्चाकांक्षाओं से तरुवर,
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर, अनिमेष, अटल, कुछ चिंता पर।'[14]

यहाँ प्रकृति का वेश बदलना तथा मेखलाकार पर्वतों का अपनी सुंदर फूल रूपी आँखों से देखना आदि में मानवीकरण रूप द्रष्टव्य है। इसी प्रकार पंत की रचना 'नौका विहार' में भी यही स्वरूप द्रष्टव्य है-

''शांत, स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्ज्वल।
अपलक, अनन्त नीरव भूतल !
सैकत-शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी-गंगा, ग्रीष्म विरल
लेटी हैं श्रांत, क्लांत निश्चल !
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरें उन पर कोमल कुंतल !
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर, लहराता तार-तरल सुंदर
चंचल अंचल सा नीलाम्बर !
साड़ी की सिकुड़न सी जिस पर, शशि की रेशमी विभा से भर,
सिमटी हैं वर्तुल, मृदुल लहर।'[15]

पंत ने अपनी कविताओं में अपनी बात कहने के लिए विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग किया है। विभिन्न प्राकृतिक उपादानों के सहारे पंत ने प्रतीक रूप में अपनी बात कही है। पंत के

काव्य संग्रह 'वीणा', 'गुंजन' और 'पल्लव' आदि में प्रकृति प्रतीक रूप में वर्णित हुई है। गुंजन की एक कविता –

कलरव किसको नहीं सुहाता ?
कौन नहीं इसको अपनाता ?
यह शैशव का सरल हास है ;
सहसा उर में है आ जाता !'[16]

यहाँ 'कलरव' शब्द प्रतीक रूप में 'जीवन के उल्लास' के लिए प्रयुक्त हुआ है। पंत की चर्चित कविता 'परिवर्तन' की निम्नलिखित पंक्तियों में भी हमें प्रतीकात्मकता स्पष्टतः दिखाई पड़ती है-

अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल, खिले न चुंबन शून्य कपोल,
हाय ! रुक गया यहीं संसार, बना सिंदूर अंगार।
वात-हत लतिका वह सुकुमार, पड़ी है। छिन्नाधार।'[17]

यहाँ प्रकृति के विविध अवयवों को प्रतीक रूप में ग्रहण कर एक नवोढ़ा युवती की करुण कथा कही है।

प्रकृति सदैव एक रूप नहीं रहती। वह मौसम, पर्यावरण व जलवायु के आधार पर अपना रूप बदलती रहती है। प्रकृति की विभिन्न स्थितियाँ लोक शिक्षिका का भी कार्य करती हैं। वह विभिन्न प्रकार से हमारे समाज का दिशा बोध भी करती है। पंत की 'द्रुत झरो' कविता में प्रकृति के माध्यम से बदलाव का संदेश है-

''द्रुत झरो जगत् के जीर्ण पत्र
हे स्रस्त-ध्वस्त। हे शुष्क शीर्ण !
हिमताप पीत मधुवात भीत
तुम वीतराग जड़ पुराचीन।'[18]

उठती हुई लहरें जो कभी किनारा नहीं देख पाती अर्थात् जीवन में विश्राम की दशा तक नहीं पहुँच पाती, वे भी मानव जीवन को अपना संदेश देती हैं-

''उठ-उठ लहरें कहतीं यह, हम कूल विलोक न पायें।
पर इस उमंग में बह-बह, निज आगे बढ़ती जावें।।'[19]

साहित्य संसार में प्रकृति के विविध अवयवों को उपमान स्वरूप प्रयोग में लाने की परिपाटी रही है। पंत ने भी अपनी कविताओं में प्रकृति का अलंकार रूप में चित्रण किया है। 'उच्छ्वास' में यह प्रयोग-

''रंगीले गीले फूलों से, अधखिले भावों से प्रमुदित
बाल्य सरिता के कूलों से, खेलती थी तरंग सी नित।''[20]

वहीं 'आँसू' कविता का यह छंद भी प्रकृति के इसी रूप को उद्घाटित करता है-

''मेरा पावस-ऋतु सा जीवन, मानस-सा उमड़ा अपार मन
गहरे, धुँधले, धुले, साँवले, मेघों-से मेरे भरे नयन।।''[21]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पंत प्रकृति के अप्रतिम चितेरे थे। उनके काव्य में हमें प्रकृति के विविध सुकुमार दृश्य दिखाई पड़ते हैं। आज भी साहित्य जगत में जब प्रकृति चित्रण की बात की जाती है तो पंत का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति चित्रण को लेकर जितने संवेदनशील पंत हैं उतना शायद ही कोई अन्य कवि। इसी कारण हिंदी जगत में उन्हें प्रकृति के सुकुमार कवि और कोमल कल्पना के कवि के नाम से जाना जाता है।

संदर्भ सूची

1. सुमित्रानंदन पंत : *आधुनिक कवि,* भाग-2, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सं. 1998, पर्यालोचन
2. सुमित्रानंदन पंत : *ग्राम्या,* ग्राम श्री कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1977, पृष्ठ 36
3. सुमित्रानंदन पंत : *पल्लव, सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन,* सं. कुमार विमल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 44
4. सुमित्रानंदन पंत : *पंत ग्रंथावली,* भाग-1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ 186
5. सुमित्रानंदन पंत : *गुंजन, सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन,* सं. कुमार विमल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 70
6. सुमित्रानंदन पंत : *गुंजन,* भारती भंडार, इलाहाबाद, 1981, पृष्ठ 34
7. वही, पृष्ठ 32
8. सुमित्रानंदन पंत : आँसू कविता, *पल्लव,* इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथमावृत्ति, पृष्ठ 28
9. सुमित्रानंदन पंत : वीणा-ग्रंथि, भारती भंडार, इलाहाबाद, सं. 2007, पृष्ठ 125
10. सुमित्रानंदन पंत : *पल्लव, सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन,* सं. कुमार विमल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 57
11. सुमित्रानंदन पंत : *गुंजन,* भारती भंडार, इलाहाबाद, 1981, पृष्ठ 3
12. सुमित्रानंदन पंत : *सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन,* सं. कुमार विमल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 41
13. सुमित्रानदन पंत : आँसू कविता, *पल्लव,* इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथमावृत्ति, पृष्ठ 17
14. सुमित्रानंदन पंत : *पल्लव, सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन,* सं. कुमार विमल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 44
15. सुमित्रानंदन पंत : *गुंजन, सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन,* सं. कुमार विमल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 69
16. सुमित्रानंदन पंत : *गुंजन,* भारती भंडार, इलाहाबाद, 1981, पृष्ठ 42

17. सुमित्रानंदन पंत : *पल्लव,* इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथमावृत्ति, पृष्ठ 120
18. सुमित्रानंदन पंत : युगपथ, *सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन,* सं. कुमार विमल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 73
19. सुमित्रानंदन पंत : *गुंजन,* भारती भंडार, इलाहाबाद, 1981, पृष्ठ 38
20. सुमित्रानंदन पंत : *पल्लव,* इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथमावृत्ति, पृष्ठ 06
21. सुमित्रानंदन पंत : 'आँसू' कविता, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथमावृत्ति, पृष्ठ 17

• • •

296